International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 05, May 2019
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

साहित्यकार श्री शंभुनाथ बलियासे 'मुकुल' जी का साहित्यिक व्यक्तित्व

डॉ. ध्रुव प्रसाद देव

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग,

साहेबगंज कॉलेज, साहेबगंज

सिद्धु कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, देवघर

सारांश :

मुकुल जी की लेखन–शैली, घटनाओं की गहरी पकड़ और साहित्यिक, अवदान के कारण बिहार से प्रकाशित दैनिक 'आर्यावर्त्त' ने इन्हें संताल परगना के विशेष संवाददाता के रूप में प्रतिनियुक्त किया। इस पत्र में प्रायः हर सप्ताह इनके द्वारा प्रेषित समाचार और विषय रूप से प्रकाशित होते रहे। समाचार–लेखन की इनकी प्रतिभा के कारण दैनिक 'प्रदीप', दैनिक 'जनता' और 'नवराष्ट्र' आदि समाचार पत्रों ने इन्हें अपना संवाददाता नियुक्त किया। दो तीन वर्षों के बाद ही जिला पत्रकार संघ के सदस्य के रूप में जिला के उपायुक्त द्वारा आयोजित पाक्षिक पत्रकार–सम्मेलन में ससम्मान बुलाये जाने लगे। अपने द्वारा रचित साहित्य के समान ही मुकुल जी आमजन की पक्षधरता को अपने समाचारों–द्वारा प्रमाणित करते रहे। 'संताल परगना का समाचार' शीर्षक से ये अपनी समाचार–समीक्षा 'आयावर्त्त' को भेजा करते थे। चूँकि मुकुल जी एक संवेदनशील निर्भीक साहित्यकार थे, इसलिए उनके समाचार में दबे–कुचलों के प्रति एक आत्मीयता झलकती थी और अफसरी धांधलियों के प्रति एक आक्रोश 1947 के अप्रैल महीने तक मुकुल जी अध्यापन–कार्य से जुड़े रहे। अवकाश के दिनों में साहित्य–लेखन और संवाद–प्रेषण का कार्य करते रहे और मई महीने में साप्ताहिक 'प्रकाश' के संपादक के रूप में अंतर्वीक्षा के बाद नियुक्त कर लिए गए। अध्यापन का कार्य और सरकारी नौकरी को तिलांजलि देकर एक संस्था (संताल पहाड़िया सेवा मंडल) के द्वारा प्रकाशित पत्रिका में संपादक बनना उनके भावी साहित्यिक व्यक्तित्व का प्रथम सोपान है।

शब्द कूट : लेखन, पत्रकारिता, साहित्य, पक्षधरता, साहित्यकार, संवाद–प्रेषण, पत्र–पत्रिका आदि।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

विषय विस्तार

किसी भी साहित्यकार का साहित्यिक व्यक्तित्व विभिन्न परिस्थितियों के मंथन से उत्पन्न, भावात्मक और वैचारिक स्तर पर अभिव्यंजन की आकुलता से व्यक्त होता है। अभिव्यंजन की यह आकुलता कृतित्व–सर्जन के लिए प्रेरित करती है। स्पष्टतः साहित्यिकार का कृतित्व उसके साहित्यिक व्यक्तित्व का ''पैरोमीटर'' बन जाता है। मुकुल जी की मौलिक प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाएँ उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के प्रकाशक तत्त्व हैं।

मुकुल जी ने साहित्य के प्रति अपनी रुचि, साहित्य रचना के प्रति अपनी प्रवृत्ति और पत्र–संपादन के प्रति अपनी क्रियाशीलता का संकेत अपने छात्र जीवन में ही दे दिया था। साहित्य की विभिन्न विधाओं में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा का विस्फोट सर्व प्रथम उनके छात्र–जीवन में लिखित 'स्वतंत्र भारत' नामक उनके नाटक में हुआ। सरकारी हस्तक्षेप के कारण इस नाटक की छपाई तो दूर, इसके मंचन की सारी कोशिशें नाकामयाब हो गईं। द्वितीय अध्याय में मंचन की इस विफलता पर विस्तार से लिखा गया है।

देवघर नगर साहित्य, संगीत और कला के मर्मज्ञ के रूप में ख्यात है। 1935–36 में मुकुल जी ब्रजभाषा में कविताएँ लिखते थे। उन दिनों इस क्षेत्र में सवैया, कवित्त, दोहा आदि छन्द अत्यधिक प्रिय थे। मुकुल जी ने इन छंदों में कविता लिखने का श्रीगणेश किया। कवि–सम्मेलनों में इस बाल–कवि शंभुनाथ की सराहना होने लगी और इन्हें 'भविष्य के फूल का मुकुल' समझा जाने लगा। तभी से ये 'मुकुल' कहे जाने लगे और इन्होंने अपना उपनाम 'मुकुल' रख लिया। कालांतर में मुकुल जी खड़ी बोली में कविताएँ लिखने लगे। छायावाद की अवसान बेला में मात्रिक और वार्णिक छन्दों में लिखित उनकी कविताएँ जनोन्मुख कविताएँ थीं। बाद में मुकुल जी ने पुराने छन्दों और भाषा को त्याग कर खड़ी बोली में विभिन्न छन्द–बंधों और मुक्त छन्द में कविताएँ लिखीं। 1936 में गया से प्रकाशित 'केशरी' में इनकी खड़ी बोली की पहली कविता प्रकाशित हुई। 1936 के बाद विभिन्न दैनिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, मासिक आदि पत्र–पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ छपीं।

जिन दिनों मुकुल जी हिन्दी विद्यापीठ में शिक्षारत थे, विद्यापीठ के वातावरण ने उनमें साहित्य सृजन की पिपासा जगा दी थी। सृजन की यह पिपासा मात्र काव्य–सृजन तक सीमित नहीं थी, बल्कि गद्य की विभिन्न विधाओं और पत्रकारिता तक फैली हुई थी। यह उन्हीं दिनों (1936) की बात है कि देवघर नगर में साहित्यिक रुचि रखने वाले नवकुमारों ने एक साहित्यिक क्लब की स्थापना की थी।

इस क्लब का नाम 'आनंदी समाज' था। 'आनंदी समाज' के सदस्यों ने आनंदी समाज के नाम से साहित्य की विभिन्न विधाओं वाली एक हस्तलिखित पत्रिका निकालने का निर्णय किया। इसके संपादक मुकुल जी बनाये गए। उन्होंने अपने मित्रों से लेख, कहानी, कविता, गद्य–गीत आदि सामग्री संकलित कर उनका संपादन किया और लगभग एक महीने के पुनर्लेखन जैसे परिश्रम के बाद पत्रिका का प्रथम अंक प्रस्तुत किया। यह पत्रिका हिन्दी विद्यापीठ साहित्य–परिषद् के सदस्यों, वहाँ के अध्यापकों–प्राध्यापकों द्वारा सराही गई और बाद में नगर के सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय के वाचनालय में आम पाठकों के लिए रख दी गई। इस पत्रिका ने मुकुल जी को देवघर नगर में भविष्य के एक पत्रकार के रूप में चिह्नित कर दिया।

साहित्यिक गति–विधि :

मुकुल जी की आलोचना–दृष्टि अत्यंत प्रखर है। देवघर और पटना से प्रकाशित साप्ताहिक 'प्रकाश' के संपादक के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने अपनी इस दृष्टि का परिचय दिया है। एक ओर पत्रिका संपादन का गुरुभार और दूसरी ओर देवघर नगर के हिन्दी साहित्य परिषद् के पद को उन्होंने बड़ी तत्परता और मनोयोग पूर्वक निभाया। उन दिनों उनके इर्द–गिर्द छोटे–बड़े साहित्यकार जुड़े रहे। वे नवोदित साहित्यकारों को निरंतर प्रोत्साहन देते। इनकी रचनाओं का आत्मीयता पूर्वक संशोधन करते और 'प्रकाश' में प्रकाशित कर प्रोत्साहित करते। इस अवधि में उनका स्वलेखन भी चलता रहा। वे निरंतर साहित्यिक गोष्ठियों में भाग लेते और अपने विचार प्रस्तुत करते। देवघर की साहित्यिक गतिविधियों के वे प्राण–तत्त्व थे। किन्तु, उनकी दृष्टि स्थानीय साहित्य–विकास से लेकर राष्ट्रीय–स्तर तक विकास की उनकी सोच का ही परिणाम था कि उन्होंने देवघर में जिला हिन्दी–साहित्य सम्मेलन का आह्वान किया और उसे बिहार हिन्दी साहित्य–सम्मेलन के साथ जोड़ दिया। उस समय देवघर हिन्दी साहित्य परिषद् के मंत्री के रूप में प्रो॰ ताराचरण खवाड़े काम कर रहे थे। वे अभी एम.ए. की परीक्षा देकर अपने गृह नगर में रह रहे थे। उनके मंत्रित्व में एक विराट् साहित्य–सम्मेलन के आयोजन की अंतःप्रेरणा मुकुल जी ने दी, जिसमें संताल परगना के सर्वश्रद्धेय साहित्यकार पं॰ जनार्दन मिश्र परमेश को सम्मानित किया गया। बिहार प्रदेश ही नहीं, बाहर से भी अनेक विद्वानों ने इस सम्मेलन को अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित किया। लगातार तीन दिनों तक साहित्य–मंथन का कार्य इस सम्मेलन में हुआ। निश्चय ही यह सम्मेलन देवघर के साहित्यिक इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। 1959 के इस साहित्यिक समारोह में संताल परगना जिला हिन्दी साहित्य–सम्मेलन का पुनर्गठन एक

ऐतिहासिक घटना थी। इस अवसर पर स्थानीय सांस्कृतिक संस्थान श्री गणेश कला मंदिर द्वारा मुकुल जी रचित 'कला मंदिर' नामक एकांकी नाटक का मंचन किया गया। कला संस्थानों की तत्कालीन स्थितियों पर लिखा गया यह नाटक मुकुल जी की एक बहु प्रशंसित कला कृति है। इस अवसर पर आयोजित कवि–सम्मेलन की याद आज तक देवघर वासी करते हैं।

मुकुल जी जब सारवाँ विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत थे, वहाँ जिला शिक्षा–सम्मेलन के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक समारोहों में उनके नाटक 'समाजक वेदी पर' का जब मंचन विद्यार्थियों के द्वारा हुआ तो उससे प्रभावित होकर संताल परगना के तत्कालीन शिक्षा अधीक्षक ने उन्हें स्वर्ण पदक देकर सम्मानित ही नहीं किया, बल्कि उन्हें गले से लगा लिया। पूर्ण संताल परगना के चुने हुए माध्यमिक शिक्षकों के प्रतिनिधियों और शिक्षा–विभाग के पदाधिकारियों द्वारा मुकुल जी की यह सराहना उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देने वाली घटना थी।

मुकुल जी की लेखन–शैली, घटनाओं की गहरी पकड़ और साहित्यिक, अवदान के कारण बिहार से प्रकाशित दैनिक 'आर्यावर्त्त' ने इन्हें संताल परगना के विशेष संवाददाता के रूप में प्रतिनियुक्त किया। इस पत्र में प्रायः हर सप्ताह इनके द्वारा प्रेषित समाचार और विषय रूप से प्रकाशित होते रहे। समाचार–लेखन की इनकी प्रतिभा के कारण दैनिक 'प्रदीप', दैनिक 'जनता' और 'नवराष्ट्र' आदि समाचार पत्रों ने इन्हें अपना संवाददाता नियुक्त किया। दो तीन वर्षों के बाद ही जिला पत्रकार संघ के सदस्य के रूप में जिला के उपायुक्त द्वारा आयोजित पाक्षिक पत्रकार–सम्मेलन में ससम्मान बुलाये जाने लगे। अपने द्वारा रचित साहित्य के समान ही मुकुल जी आमजन की पक्षधरता को अपने समाचारों–द्वारा प्रमाणित करते रहे। 'संताल परगना का समाचार' शीर्षक से ये अपनी समाचार–समीक्षा 'आयावर्त्त' को भेजा करते थे। चूँकि मुकुल जी एक संवेदनशील निर्भीक साहित्यकार थे, इसलिए उनके समाचार में दबे–कुचलों के प्रति एक आत्मीयता झलकती थी और अफसरी धांधलियों के प्रति एक आक्रोश 1947 के अप्रैल महीने तक मुकुल जी अध्यापन–कार्य से जुड़े रहे। अवकाश के दिनों में साहित्य–लेखन और संवाद–प्रेषण का कार्य करते रहे और मई महीने में साप्ताहिक 'प्रकाश' के संपादक के रूप में अंतर्वीक्षा के बाद नियुक्त कर लिए गए। अध्यापन का कार्य और सरकारी नौकरी को तिलांजलि देकर एक संस्था (संताल पहाड़िया सेवा मंडल) के द्वारा प्रकाशित पत्रिका में संपादक बनना उनके भावी साहित्यिक व्यक्तित्व का प्रथम सोपान है।

मुकुल जी की साहित्यिक प्रतिभा, लोकभाषा में घेरा, झूमर आदि लिखने में अत्यधिक प्रखर थे। इस प्रतिभा ने उन्हें 1943–44 में धनवार राज में राजकीय लेखक बनने का आमंत्रण दिलवाया। मुकुल जी अपने एक साहित्यिक मित्र श्री रामतूली सिंह के साथ उनकी ससुराल के गाँव 'सेनादोनी' गए हुए थे। वहीं उनकी भेंट धनवार के घाटवाल से हुई। घाटवाल नृत्य, संगीत, नाटक और झूमर के रसिया थे। जब उन्होंने मुकुल जी के सम्मान में संध्या समय आयोजित सांस्कृतिक समारोह में मुकुल जी से उनकी स्वलिखित झूमर, घेरा आदि रचनाओं को सुना तो घाटवाल साहब लोट–पोट हो गए और उन्होंने उन्हें अपनी जमींदारी में जमीन देकर और उनके सम्पूर्ण परिवार के भरण–पोषण की व्यवस्था के साथ राजधनवार में ही रहने का आग्रह किया। यद्यपि मुकुल जी वहाँ नहीं रहे, किन्तु यह उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का एक विशिष्ट सम्मान तो था ही। मुकुल जी की रचनाओं से प्रभावित होकर एक बार बंगाल के एक सिनेमा डाइरेक्टर ने उन्हें अपने लिए अनुबंधित करने का प्रस्ताव रखा, किन्तु घर वालों के कारण वे इस क्षेत्र में नहीं जा सके।

मुकुल जी का साहित्यिक व्यक्तित्व एक तथ्यान्वेषी साहित्यकार का व्यक्तित्व रहा है, जो अपने द्वारा अनुसंधानिक अन्वेषणों के आधार पर पुरानी मान्यताओं को खंडित करके नई मान्यताएँ स्थापित करते चलता है। इसके लिए वे स्वयं विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करते रहे और परिश्रम पूर्वक अपने साहित्य के लिए सामग्री जुटाते रहे। संताल परगना के 'दामिन' क्षेत्रों, हजारीबाग के जंगलों, गाँवों का दौरा कर ग्राम्य जीवन का गहराई से अध्ययन करते रहे और ऐसे यात्रा–अनुभवों से प्राप्त सच्ची सूचनाओं के आधार पर जीवन के विविध रंगों को अपने साहित्य में उपस्थित किया है। कलकत्ता, दिल्ली, पटना, देवघर और फरीदाबाद जैसे नगरों–महानगरों की गतिशील जिंदगी के परिवर्त्तित होते हुए जीवन और जीवन के मूल्यों को उसके अंतस्थल में जाकर पकड़ते रहे और उन्हें अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करते रहे। मुकुल जी अति जिज्ञासु साहित्यकार हैं। उनका यह निरंतर प्रयास रहता है कि वह नित्य नयी दिशाओं में यायावर की भाँति निर्द्वन्द्व होकर विचरण करें और इससे प्राप्त अनुभवों को संचित कर, जुड़ा कर रख लें। इस संचय के कारण साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित मठाधीशों को वे अनेक बार मुँहतोड़ जवाब देते रहे। अनुभव की अपनी विशालता के कारण वे हर गलत और गर्हित स्थितियों पर आलोचनात्मक उँगली रखते हैं। मुकुल जी की विद्वत्ता ड्राइंग रूप में अर्जित की गई विद्वत्ता नहीं है, वह अनुभव जन्य विद्वत्ता है।

मुकुल जी के साहित्यिक व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सादगी है, प्रत्यक्षाभिव्यक्ति है, भाषा की सरलता, स्पष्टता और शुद्धता है। उनकी सादगी और स्पष्टता ने उन्हें आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, डॉ॰ केशरी कुमार, श्री नरेश, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, आचार्य क्षेमचंद्र सुमन, डॉ॰ विष्णु किशोर झा 'बेचन', श्री अनुप लाल मंडल, श्री राधा कृष्ण प्रसाद, प्रो॰ उदय भानु (हरियाणा), पं॰ बुद्धिनाथ झा 'कैरव', श्री लक्ष्मी नारायण सुधांशु, जनार्दन प्रसाद झा द्विज, आचार्य शिवपूजन सहाय, डॉ॰ जनार्दन मिश्र, प्राचार्य उदय भानु सिंह 'हंस', डॉ॰ महीप सिंह, बी॰एल॰ विश्वबंधु, डॉ॰ विजयेन्द्र स्नातक आदि के निकट संपर्क में जाने का अवसर प्रदान किया। उक्त सभी विद्वानों के साहचर्य से इनके साहित्यिक व्यक्तित्व में और अधिक निखार आया। 'नकेनवाद' के पुरोधाओं के संग–साथ ने इनकी काव्य–प्रवृत्ति को प्रगतिशील बनाया तो आचार्य शिवपूजन सहाय, लक्ष्मी नारायण सुधांशु और कैरव जी जैसे विद्वानों के साहचर्य ने इन्हें हिन्दी–भाषा की परिष्कृति की ओर अग्रसर किया। मुकुल जी के साहित्यिक व्यक्तित्व को सहेजने और संवारने का काम मूलतः उनके पटना–प्रवास में उनके साहित्यिक मित्रों ने किया। पटना में अपने पूर्व आचार्य डा॰ लक्ष्मी नारायण सुधांशु, श्री शिव पूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा, आचार्य छवि नाथ पांडेय, आचार्य रामदयाल पांडेय आदि की निकटता ने उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को संवारने में प्रेरक का कार्य किया।

'प्रकाश' के संपादक के रूप में वे अनेक साहित्यकारों के सानिध्य में आए। पटना से जब 'प्रकाश' प्रकाशित हो रहा था, उसी अवधि में वहाँ से 'नवशक्ति', 'हुँकार', 'जनता', 'स्वदेश' और अन्य साप्ताहिक प्रकाशित हो रहे थे। 'प्रकाश' ने उन पत्रिकाओं के बीच अपना एक विशिष्ट और प्रमुख स्थान बना लिया था। 'प्रकाश' 'समाचार विचार–प्रधान' एक पत्रिका थी, किन्तु मुकुल जी ने उसे एक 'समाचार–विचार साहित्यिक पत्रिका' के रूप में ढ़ाल दिया। उन्होंने इसमें श्री द्वारिका प्रसाद के विवादास्पद उपन्यास 'घेरे के बाहर' तथा प्रताप नारायण सिंह के उपन्यास 'रधिया और डेढ़ आँख' को धरावाहिक रूप से प्रकाशित किया। हिन्दी के सभी यशस्वी लेखकों और कवियों की रचनाएँ इसमें प्रकाशित हुईं। साहित्य की विभिन्न विधाओं की अद्यतन रचनाओं से प्रतिदिन दो–चार होने के कारण मुकुल जी का 'साहित्य–विवेक' निखरता गया। उनकी पत्रकारिता और साहित्य के प्रति झुकाव ने उन्हें निराला–समिति का सम्मान्य सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। श्री चन्द्रशेखर शास्त्री और सुगन चन्द्र शास्त्री जैसे हिन्दी जगत् के स्वनामधन्य विद्वान जो उस समय निराला जी की सेवा सुश्रुषा कर रहे थे, के सौजन्य से मुकुल जी को निराला की दस–पन्द्रह मौलिक और अप्रकाशित रचनाएँ 'प्रकाश' में

छापने का सौभाग्य मिला। इलाहाबाद आते–जाते रहने और और वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों से परिचत होने के कारण उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में और अधिक निखार आया।

'प्रकाश' तत्कालीन 'नयी कविता' का मुखपत्र बन गया था। नकेनवाद पर लगातार उसमें विचार, आलोचना आदि प्रकाशित हुए। नकेनवादी या प्रपद्यवादी कविता के लिखने के लिए जो दससूत्री योजना बनी, उसका प्रकाशन 'प्रकाश' के बारह अंकों में किया गया। नकेनवाद के इस प्रभाव के कारण मुकुल जी में नकेनवादी कविताएँ लिखने की प्रवृत्ति जगी। काव्य–क्षेत्र में उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का यह एक इतर विकास था।

मुकुल का साहित्यिक विवेक क्रमशः विकसित हुआ है। गद्य और पद्य– दोनों विधाओं में इनकी लेखनी अबाध रूप से चली। गद्य के क्षेत्र में नाटक और कथा–साहित्य उनका प्रिय विषय है। नाटक के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा की पहचान सबसे पहले डॉ॰ विष्णु किशोर झा 'बेचन' ने की थी। मुकुल जी मूलतः ग्रामीण समस्या प्रधान नाटकों के रचयिता रहे हैं। उपन्यास–क्षेत्र में वे आदिवासी–समस्याओं, संस्कृतियों उनमें आती हुई जागृति, उनमें बढ़ता हुआ ईसाई प्रभाव, राजनीतिक स्वार्थ के लिए उनका दुरूपयोग आदि ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिन पर प्रकाश डाला गया है और भविष्य के संकटों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है।

मुकुल जी की कहानियाँ 'मानव अन्तःकरण की मृदु–मंजु, मधुर भावनाओं को उकेरने वाली है।' इनके आलोचनात्मक गद्य में विचार, शृंखला के रूप में सप्रमाण प्रस्तुत हैं। वहीं संपादकीय लेखों में व्यंग्य और वक्रोक्ति की छटाएँ हैं। उनके गद्य में उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के अनेक आयाम उभर कर सामने आए हैं। किन्तु, सर्वत्र वे आम जन के साथ और सामाजिक दुर्व्यवस्था, राजनीतिक भ्रष्टाचार और आपराधिक मनोवृत्तियों के विरुद्ध खड़े हैं। गद्य में उनके विवेचन का ढंग अनूठा है।

पद्य–क्षेत्र के साहित्य–जगत में मुकुल जली का प्रवेश गया से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'केशरी' के माध्यम से हुआ। इसके बाद तो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में उनकी गद्य–पद्य की रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। दिल्ली से प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका 'धारा' में लगातार इनकी कविताएँ, कहानियाँ, एकांकी, आलोचनात्मक लेख आदि प्रकाशित हुए। बिहार, उत्तर प्रदेश, कलकत्ता आदि की पत्र–पत्रिकाओं में इनकी विभिन्न विधाओं की रचनाएँ छपती रहीं। पटना से प्रकाशित तत्कालीन प्रसिद्ध 'दैनिक प्रदीप' में ही इनकी लगभग पच्चीस कहानियाँ प्रकाशित हुईं। उसमें उनकी कविताएँ और लेख मांग कर प्रकाशित किये गए। पटना के अन्य दैनिक 'जनता', 'राष्ट्रवाणी', 'नवराष्ट्र', 'आर्यावर्त्त', 'नवीन भारत',

'विश्वामित्र' ने इनकी कहानियों और कविताओं को चाव से छापा। कलकत्ता से प्रकाशित 'विश्वामित्र, नवभारत टाइम्स, सन्मार्ग आदि दैनिकों में भी इनकी कहानियाँ और कविताएँ प्रमुखता से प्रकाशित हुईं। ज्योत्स्ना, पाटल, अवंतिका, नयी धारा, किशोर, बिहार, आदि पटना से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं, चुन्नु–मुन्नु, निर्माण, चिनगारी, नवशक्ति, ग्राम्या, ग्राम पंचायत, मंगला, राष्ट्र–संदेश, उद्योग–जगत, बिहार–वाणी, आद्यन्त आदि में इनकी रचनाएँ लगातार प्रकाशित हुईं। साप्ताहिक विश्वामित्र, संसार मित्र, कान्य कुब्ज पत्रिका, सूत्रकार (मासिक), शताब्दी–संवाद, रूपम, हमारा भारत, (लाहौर) जीवन, पब्लिक ओपीनियन, प्राण, विश्वज्योति आदि विविध क्षेत्रों से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती रहीं। इनके साहित्यिक व्यक्तित्व का फैलाव अखिल भारतीय स्तर पर दृष्टिगोचर होता है।

मुकुल जी की रचनाएँ कई अभिनंदन–ग्रंथों में भी संग्रहित हैं। 'डॉ॰ दुखन राम अभिनंदन ग्रंथ', 'महाकवि आरसी अभिनंदन ग्रंथ' आदि में इनके श्रेष्ठ अभिनंदन लेख प्रकाशित हैं। इनकी अनेक पुस्तक समीक्षाएँ साहित्यकारों के बीच चर्चा में रहीं। सुविख्यात उपन्यासकार, शैलीकार एवं कथाकार राजा राधिकारमण प्रसाद के चार नाटकों की इनके द्वारा लिखी गई पुस्तक समीक्षाएँ इनकी समीक्षात्मक दृष्टि के प्रमाण हैं। ये समीक्षाएँ 'अवंतिका' में प्रकाशित हुई थीं।

अपने उदात्त मानवीय गुणों तथा साहित्यिक सेवाओं के फलस्वरूप मुकुल जी ने अपने जीवन में अपने इष्ट मित्रों, बंधु–बांधवों तथा चिंतकों से अत्यधिक स्नेह पाया, वहाँ उन्होंने पर्याप्त मान–सम्मान भी अर्जित किया। मुकुल जी ने बलात् अथवा आरोपित जीवन द्वारा प्रतिष्ठा पाने का कभी प्रयास नहीं किय– उन्होंने जो कुछ पाया उसे अपने मानवीय गुणों, अपने व्यक्तित्व तथा अपने सामाजिक एवं साहित्यिक कृतित्व के बल पर बिना मांगे पाया। समय–समय पर विभिन्न निकायों और समितियों का सदस्य बनाकर, अनेक आयोजनों का अध्यक्ष–पद प्रदान कर इन्हें लोगों ने सम्मानित किया।

निष्कर्ष :

मुकुल जी की प्रकाशित कृतियों में उनका साहित्यिक व्यक्तित्व संपूर्णतः व्यक्त हुआ है। उनकी प्रकाशित कृतियों का अध्ययन शोध–ग्रंथ के विभिन्न अध्यायों में किया जायेगा। मुकुल जी के समग्र कृतित्व का जिसके माध्यम से उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है, अध्ययन करने पर यह

स्पष्ट होता है कि उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में उनका नाटककार वाला व्यक्तित्व अधिक मुखर है। उनकी कहानियाँ, उनके उपन्यास और उनकी कविताएँ नाटक के बाद ही स्थान पाती हैं। उन्होंने चुनौती भरे क्षेत्र को अपनाया और उसमें सफलता पायी। उन्होंने साहित्यिक अनुष्ठान और पत्रकारिता के माध्यम से जन–सेवा और जन–जागरण का काम किया। इस कार्य ने उन्हें अनेक शुभचिंतक और प्रशंसक दिये। संताल परगना के एक कोने में बसे एक छोटे–से गाँव का एक साधारण–सा व्यक्ति अपने जुझारुपन से ऐसे साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण और ऐसी लोकप्रियता अर्जित कर सकता है, इसे मुकुल जी ही कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रो॰ ताराचरण खवाड़े – हिन्दी साहित्य को संताल परगना की देन–प्रकाश, जून, 1957
2. ताराचरण खवाड़े – हिन्दी साहित्य को संताल परगना की देन, साधना, 1997
3. प्राण प्रकाशन, फरीदाबाद, 1995
4. प्राण प्रकाशन, फरीदाबाद, 1995
5. वही,
6. 'माधुरी' में प्रकाशित उनके आलोचनात्मक निबंध सोहनलाल द्विवेदी की 'स्वप्नवासवदत्ता' एक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक लेख है, जो पुस्तक–समीक्षा के क्षेत्र में एक मानक है।
7 काल और जीवन – आचार्य शिव पूजन सहाय–सम्मति। 1995